पेसा कानून के तहत गाँव विकास नियोजन

विलेज प्रोफाइल

सिमल घाटी

ग्राम पंचायत – भोजातों का ओड़ा

ब्लॉक/पंचायत समिति – दोवड़ा

तहसील एवं जिला – डूंगरपुर, राजस्थान

पीस

गाँव का इतिहास – तीन सौ साल पहले एक बार सेमल पेड़ के नीचे घाटी में बैठकर के आदिवासियों द्वारा गांव बसाने का निर्णय लिया गया। सेमल पेड़ के नीचे घाटी में बैठकर गांव बसाने का निर्णय लेने के कारण इस गाँव का नाम सिमल घाटी पड़ा। सिमल घाटी तीन सौ साल पुराना गाँव है। गांव में दो मंदिर बने हुए हैं और दो धूणियां (धार्मिक स्थल) हैं। एक मंदिर गातोड़ जी का और एक काली माता का मंदिर है। दो गुरु गोविंद की धूणियां है जिनमें से एक शिलालेख के बगल में है और एक धूणी श्मशान घाट के पास में है।

गाँव का एक परिचय – डूंगरपुर जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में सिमल घाटी गाँव है जिसकी ग्राम पंचायत भोजातों का ओड़ा, ब्लॉक एवं पंचायत समिति दोवड़ा है, तहसील एवं जिला डूंगरपुर है। सिमल घाटी गाँव के पडौसी गाँव मसना, भोजातों का ओड़ा और सत्तु हैं। सिमल घाटी में फलों की संख्या पांच है ये बोर तलाई, होली फला, चौराहा फला, धानी फला और भागेला फला है। गांव में गाँव सभा का गठन और शिलालेख 13 अक्टूबर 2017 को हुआ था। गांव में अनुसूचित जनजाति के लोग रहते हैं उनकी मुख्य अटक (उपजातियां) अहारी, पारगी, कटारा, कलासुआ है। अनुसूचित जाति के दो परिवार जो यादव(चमार) तथा बलाई समाज के हैं। गांव के कुल घरों की संख्या 350 है। इनमें से बिजली के कनेक्शन 175 घरों में ही है। गांव के पास में एक पहाड़ी है जिस पर रामगढ़ के पाटीदारों का स्वामित्व है, इस पहाड़ी का आधा हिस्सा राजस्व गाँव रामगढ़ में आता है। गांव में जंगल नहीं है। इसलिए गांव में लघु वनोपज नहीं होती है। गाँव में तीन एनिकट है – एक कच्चा एनीकट धानी फला में है। दो पक्के एनीकट भागेला फला में है। तीनों एनिकट टूटे हुए है। गांव का पूरा रकबा 201 (दो सौ एक) हेक्टेयर है। गांव की कृषि जमीन 69 हेक्टेयर है। गांव में बेनामी जमीन 35 हेक्टेयर है। खाने में शामिल अनाज मुख्यतः मक्का, गेंहू और चावल है। गांव में सरकारी राशन की दुकान नहीं है। गांव की राशन की दुकान सत्तू में है जो 5 किलोमीटर दूर है। गाँव में तीन स्कूल है। स्कूल में कमरे आवश्यकता से कम है और स्कूल की छत से पानी टपकता है। गाँव में एक पक्की सड़क है मगर उसकी हालत खराब है। गांव में शौचालय की संख्या लगभग 200 है।

आवागमन की स्थिति – डूंगरपुर जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में सिमल घाटी गाँव है। डूंगरपुर से दोवड़ा तक हाईवे है उसके बाद हथाई तक पक्की सड़क है लेकिन वह सड़क टूटी फूटी है। हथाई में घंटे भर इन्तजार के बाद टेंपो मिलता है जो सिमल घाटी तक छोड़ता पांच किलोमीटर की दूरी तय करने में इसे बीस मिनट से आधा घंटा लगता है, इसलिए लोग पैदल भी आते-जाते हैं । सिमल घाटी बस स्टैंड से चल कर के सिमल घाटी गांव आना पड़ता है (जो सिमल घाटी बस स्टैंड से डेढ़ से दो किलोमीटर है)। आदिवासी परिवार पहाड़ियों पर बसे हुए हैं। वहां आने-जाने के लिए कच्चे रास्ते हैं। बरसात के दिनों में वहां पैदल चल पाना भी मुश्किल होता है। नीचे के रास्तों में कीचड़ और पानी भर जाता है। रास्ते उबड़-खाबड़ हैं, जिनको आर.सी.सी. सड़क या समतल करने की बेहद जरूरत है। अभी वहां केवल पैदल ही आना-जाना पड़ता है।

स्वास्थ्य एवं शिक्षा की स्थिति – सिमल घाटी गाँव में आंगनवाड़ी की संख्या 1 है। स्कूल परिसर में आंगनवाड़ी भवन बना हुआ है लेकिन जर्जर हालत में है। आंगनवाड़ी उसी जर्जर भवन में चल रही है। गाँव में दो प्राथमिक स्कूल हैं जिनमें बच्चों की संख्या 70 है और 3 अध्यापक है। गाँव में एक माध्यमिक स्कूल है जिसमें बच्चों की संख्या 94 और अध्यापक 4 है। नजदीकी उप स्वास्थ्य केंद्र भोजाता में है जो गांव से 5 किलोमीटर दूर है। अस्पताल जाने की सुविधा नहीं है इसलिए मरीजों को प्राइवेट गाड़ी में ले जाते हैं। 108 एम्बुलेंस आने में समय बहुत ले लेती है इसलिए लोग कम ही बुलाते है। इसके आलावा

सामान्य बीमारियों के इलाज के लिए हथाई या रामगढ़ जाना पड़ता है। पशु चिकित्सालय फलोज में 9 किलोमीटर दूर है। मरीज की स्थिति अगर गंभीर है तो उसको डूंगरपुर ले जाना पड़ता है। इसके लिए 500 मीटर से चार किलोमीटर पैदल मरीज को चारपाई या झोली में डालकर सड़क तक ले जाना पड़ता है। तब कहीं जाकर उनको साधन मिलता है। गाँव के आस-पास कोई दवा की दुकान भी नहीं है। दवा खरीदने के लिए हथाई जाना पड़ता हैं। बारहवीं तक पढने के लिए बीस-पच्चीस बच्चों को 5 किलोमीटर दूर भोजाता या रामगढ़ या हथाई जाना पड़ता है और डिग्री कॉलेज में पढ़ने के लिए 30 किलोमीटर दूर डूंगरपुर जाना पड़ता है। कॉलेज पढ़ने के लिए 15-16 छात्र/छात्राएं डूंगरपुर जाते है(2017 में)।

गाँव की समस्याओं का विवरण निम्नप्रकार हैं-

आवागमन की कमी - डूंगरपुर जिला मुख्यालय से लगभग 30 किलोमीटर दूर उत्तर दिशा में सिमल घाटी गाँव है। डूंगरपुर से दोवड़ा तक हाईवे है उसके बाद हथाई तक पक्की सड़क है जो टूटी फूटी है। हथाई में घंटे भर इन्तजार के बाद टेंपो मिलता है जो सिमल घाटी टेम्पो स्टेंड तक छोड़ता है। सिमल घाटी टेम्पो स्टैंड से पैदल चल कर सिमल घाटी गांव आना पड़ता है(जो सिमल घाटी बस स्टैंड से डेढ़ से दो किलोमीटर है)। आदिवासी परिवार पहाड़ियों पर बसे हुए हैं। वहां आने-जाने के लिए कच्चे रास्ते हैं। बरसात के दिनों में वहां पैदल चल पाना मुश्किल होता है। नीचे के रास्तों में कीचड़ भर जाता है। रास्ते उबड़ खाबड़ हैं, जिनको आर.सी.सी. सड़क या समतल करने की बेहद जरूरत है। अभी वहां केवल पैदल ही आना जाना पड़ता है।

भूमि एवं जल प्रबंधन की कमी - खेती उपज में मक्का, गेहूं, चना, चावल और दलहन है। गाँववासियों के पास जो जमीन है वह पहाड़ों की ढलान पथरीली एवं उबड़-खाबड़ है जिससे उनके पास कृषि लायक भूमि नहीं है। किसी तरह से बरसात में होने वाली फसल ही पैदा कर पाते हैं सूखा पड़ने पर वह भी नहीं हो पाती है। गाँव के समतल जमीन और कुछ पहाड़ी के ढलान पर खेती होती है लेकिन बाकी खाली पड़ी जमीन के उपयोग का गाँव के लोगों के पास किसी भी प्रकार की योजना नहीं है। गाँव में एक पहाड़ी है जिस पर पटेल समाज का कब्जा है जो राजस्व गाँव रामगढ़ के है। पीने के पानी की व्यवस्था कुए और हैण्डपम्प से की जाती है। जिनमें भी बरसात के बाद जल स्तर नीचे चला जाता है अभी तक जल स्तर को ऊंचा करने की योजना गाँव के लोगों के पास कुछ भी नहीं है। गर्मियों में पीने के पानी के लिए कठिनाई का सामना करना पड़ता है। कुल मिलाकर पानी के प्रबंधन की उनके पास अभी तक कोई योजना नहीं है। चाहे वह सिंचाई के लिए हो, जल स्तर ऊँचा करने के लिए हो अथवा शुद्ध पीने के पानी के लिए हो। गाँव में लगभग 25% जमीन समतल है जो कुछ परिवारों के कब्जे में है। और गाँव में एक चरागाह जिस पर भी व्यक्तिगत का कब्जा है। पीने के पानी की व्यवस्था हैंडपंप से की जाती है। गांव में एक आर.ओ. प्लांट है जो स्कूल में है। गाँव में एक नाला है जिसे फुटेड़ा तालाब वाला नाला कहते हैं। जिसमें बारिश का पानी बहता है बाकी समय यह सूख जाता है। गाँव में तीन तालाब है- पहला फुटेड़ा तालाब, दूसरा माताजी वाला तालाब और तीसरा गवली वाला तालाब। गाँव में चार तलावाड़ी हैं - पीलीवाली तलावाड़ी, लीलवाली तलावाड़ी, खजूरवाली तलावाड़ी, और गातोड़ जी मंदिर के पासवाली तलावाड़ी। जिनमें बारिश में पानी रहता है उसके बाद रिसाव से निकल जाता है। गाँव में सात कुए हैं जिनमें पानी आवश्यकता से कम ही है।

कृषि और रोजगार की स्थिति - गाँव में जमीन का रकबा 201 हेक्टेयर है जिसमें से आधी जमीन उबड़-खाबड़ और पथरीली है। पूरे गाँव की कृषि भूमि 69 हेक्टेयर ही है। वह भी उबड़-खाबड़ और पथरीली

होने से और सिंचाई के साधन नहीं होने से पैदावार/उपज कम ही होती है और भूमि उबड़-खाबड़ और ढलानवाली होने से और सिंचाई के साधन नहीं होने से मात्र एक ही फसल हो पाती है। गाँव में सिंचाई के साधनों का विकास जरुरी है। गाँव में विला नाम भूमि 35 हेक्टेयर है जिस पर लोगों ने कब्जा कर रखा है। भूमि पर वर्षों से काबीज होने के बाद भी उनको अधिकार पत्र नहीं मिले हैं, जिससे उनको बेदखल होने का भी भय बना रहता है। खेती की उपज में गेहूं, मक्का, उड़द, चना, चावल आदि होते हैं। बरसात ठीक नहीं होने से इस साल(2017 में) चावल बिलकुल नहीं हो पाया। कई परिवारों के पास जो अनाज खेती से होता वह चार-पांच माह में ही खत्म हो जाता है। लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है। इसलिए लोगों को कृषि के अतिरिक्त मनरेगा के अंतर्गत और खुली दैनिक मजदूरी करना पडती है। मनरेगा में मजदूरी 120रु. के आसपास मिलती है। वह भी 60 दिन ही मिलती है। इसलिए मनरेगा में 75% महिलाएँ ही जाती हैं। गाँव के कुछ युवा पुरुष आजीविका के लिए गुजरात के विभिन्न शहरों जैसे अहमदाबाद या महाराष्ट्र के मुंबई आदि शहरों में मजदूरी के लिए चले जाते हैं। वहां वह 250 से 300 रुपए तक की दैनिक मजदूरी करके गाँव में रहने वाले अपने परिवार का किसी तरह भरण पोषण करते हैं। कुल मिलाकर कृषि और रोजगार की स्थिति बहुत दयनीय है। जिससे उबरने की भी उनके पास कोई योजना नहीं है।

गाँव में उपलब्ध संसाधन, उनकी हालत और संभावनाएं -

संसाधन	हालत	संभावनाएं
जल तालाब नाला कुआं हैंडपंप ट्यूबवेल	गाँव में एक फुटेड़ा तालाब वाला नाला है। गाँव में तीन तालाब है। फुटेडा तालाब, माताजी वाला तालाब और गवली वाला तालाब। दोनों तालाबों - गवली वाले तालाब में और माताजी वाले तालाब में पानी नहीं रहता है। फुटेड़ा तालाब पानी रुकता है लेकिन वह भी सिंचाई के लिए उपयोग करने कारण सूख जाता है। गांव में सात कुए हैं जिनमें से 2 सार्वजनिक कुए है - एक गवली वाला कुआं और एक नवा कुआं। पीने के पानी की व्यवस्था कुए और हैण्डपम्प से की जाती है। जिनमें भी बरसात के बाद जल स्तर नीचे चला जाता गाँव के पीने के पानी में फ्लोराइड पाया जाता है। गाँव में शुद्ध पानी पीने की व्यवस्था के लिए एक ही आर. ओ. प्लांट है।	कुआ गहरीकरण एवं रिंग वाल निर्माण। सार्वजनिक कुआं गहरीकरण। पेयजल के लिए नल की व्यवस्था। बंद हैंडपंप को चालू करवाना चाहते हैं। दो और आर. ओ. प्लांट लगवा करके फ्लोराइड से मुक्ति चाहते हैं। एनीकट, तालाबों और तलावड़ीयों की अगर मरम्मत करके ठीक कर दिए जाएं तथा नाले पर और एनीकट बनाया जाए और गाँव के पहाड़ों के दर्रे पर एनीकट का निर्माण कर दिया जाए तो गाँव के लोगों की सिंचाई का संकट दूर हो सकता है। तो जलस्तर भी ऊंचा हो जाएगा। और गाँव में गर्मियों में पानी के संकट को दूर किया जा सकता है। गाँव में बरसात के पानी को ज्यादा से ज्यादा रोक कर, कुएं रिचार्ज करके जल स्तर ऊंचा किया जा सकता है।
जमीन कृषि भूमि बिलानाम भूमि	सिंचाई के साधन और पानी की कमी से उत्पादन में कमी है। चरागाह नहीं है। कृषि भूमि 26	गाँव की बिलानाम भूमि की खातेदारी का पट्टा करवाना। जमीन का समतलीकरण करके उसे उपजाऊ

चरागाह	हेक्टेयर है। बिलानाम भूमि 13 हेक्टेयर है जो खाली पड़ी हुई है। छोटे छोटे पहाड़ भी हैं। गाँव में चारागाह भी है लेकिन उस पर व्यक्तिगत कब्जा है।	बनाया जा सकता है। गाँव की बेकार पड़ी जमीनों को गाँव सभा के अधीन करके उस पर भी वृक्षारोपण किया जा सकता है। और उससे आय के साधन बनाए जा सकते हैं। जो जमीन लोगों के खातेदारी में हैं उस पर कुछ पैदा नहीं किया जा रहा है और वह जमीन खाली पड़ी है तो उस पर भी वृक्षारोपण किया जा सकता है। जिससे लोगों की आय के साधन बढ़ सकते हैं। सब्जी की खेती भी करके आय बढ़ाई जा सकती है।
स्कूल	दो प्राथमिक और एक माध्यमिक स्कूल है। स्कूल में अध्यापकों की कमी है।	स्कूल की मरम्मत, कक्ष निर्माण और अध्यापकों की नियुक्ति होने से बच्चों के पढ़ने की व्यवस्था बेहतर की जा सकती है।
आंगनबाड़ी	आंगनबाड़ी भवन है जर्जर है।	बनवाना है।
सड़क	सी.सी. सड़क 2 हैं। नई बनाई गई है। नई सड़क की देखरेख की जाने की आवश्यकता है।	गांव में कच्ची सड़क खराब पड़ी है और बनाया जाए।
कच्चे और पक्के मकान	कुछ घर पक्के हैं बाकी कच्चे हैं	विभिन्न आवास योजनाओं का लाभ गाँववासियों को दिलाया जा सकता है।

पशुपालन हेतु चारे व चरागाह की कमी – गाँव के कुछ लोग बकरी, गाय और भैंस पालते हैं। जानवरों हेतु चारे की उपलब्धता भी 4 माह तक होती है बाकी चारा खरीदना पड़ता है। गाँव के चरागाह पर भी व्यक्तिगत कब्जा है। चारे के संकट के कारण पशुपालन नहीं हो पाता। कुछ लोगों के पास 1-2 गाय, बैल और बकरियाँ ही पशु के नाम पर हैं। गाय एक से डेढ़ लीटर दूध देती है जो केवल बच्चों के पीने के काम आता है। उनके लिये बकरी पालन भी कर पाना कठिन है क्योंकि उनको चारा चराने की जगह उनके पास नहीं है। गरीबी के कारण चारा भी खरीद पाने की स्थिति में नहीं हैं। दूध की कमी के कारण दूध बाजार से पेकेट के रूप में खरीदना पड़ता है जो पुनाली से लाना पड़ता है या दूध बेचने वाला पुनाली से आता है।

आजीविका के साधनों की कमी – खेती, पशुपालन और मनरेगा में मजदूरी के अलावा और कोई भी रोजगार का साधन गाँव में नहीं है। जिन लोगों के पास खेती ज्यादा है वह लोग कृषि और पशुपालन में लगे हैं। जिनके पास कृषि भूमि कम है उन परिवारों के लोगों को गुजरात के शहरों में दैनिक मजदूरी करने जाना पड़ता है क्योंकि मनरेगा में काम भी 50-60 दिन ही मिलता है और मजदूरी भी 120 रु. प्रति दिन ही मिलती है जिससे उनके परिवार का गुजारा हो पाना मुश्किल है।

सरकारी योजनाओं से वंचितों की स्थिति – ज्यादातर गाँव के लोग सरकारी सुविधाओं से वंचित हैं। सौ दिन काम नहीं मिलने से वह श्रमिक कार्ड से वंचित हैं। कुछ लोगों की पेंशन पाने की उम्र भी हो चुकी

है लेकिन पहचान पत्र में उनकी उम्र कम होने से पेंशन नहीं मिल पा रही है। उम्र संशोधन कराने की एक तो जानकारी नहीं है और दूसरा अगर इसके लिए कुछ लोग प्रयास भी करते हैं तो कर्मचारियों द्वारा उनको सहयोग नहीं मिलता। कभी–कभी उनसे इसके लिए शुल्क के अलावा अतिरिक्त पैसे की भी मांग की जाती है। गाँव में सरकारी राशन की दुकान नहीं है। पहले राशन की दुकान भोजाता का ओड़ा में थी जो अब हथाई में कर दी है। वहाँ कुछ लोगों का अंगूठा निशान नहीं मिलने से राशन नहीं मिलता है। कभी–कभी राशन की गुणवत्ता खराब होती है। राशन की दुकान पर गेहूं हर महीने मिलता है। नए राशनकार्ड वालों को गेंहू नहीं मिल रहा है। चीनी और मिट्टी का तेल तीन–चार महीने में मिलता है। चावल नहीं मिलता है। गांव में पेंशन लाभार्थियों की संख्या 60 है जिसमें वृद्धा पेंशन महिला 25 हैं। वृद्धा पेंशन पुरुष 35 हैं। विधवा पेंशन लाभार्थी 15 है। गांव में आवास योजना के पात्रों की संख्या 165 है। इंदिरा आवास योजना के लाभार्थी 35 है। प्रधानमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों की संख्या 30 है मुख्यमंत्री आवास योजना के लाभार्थियों की संख्या 15 है।

गाँव सभा द्वारा चिह्नित समस्याएं, उनके कारण, प्रस्तावित समाधान एवं उनकी वरीयता –

क्र.सं.	समस्याएं	सार्वजनिक/ व्यक्तिगत	कारण	समाधान	तात्कालिक/ दीर्घकालिक	वरीयता
1	**रास्ते की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव में रास्ते का निर्माण सार्वजनिक निर्माण विभाग तथा पंचायत के द्वारा करवाया जाता है। दोनों विभागों में व्याप्त लापरवाही और भ्रष्टाचार के चलते रास्तों का निर्माण मानकों के अनुरूप नहीं होने से रास्ते 2–3 वर्ष में ही टूट फूट जाते है। जिस पर साधन चलना मुश्किल हो जाता है। गाँव में आपसी विवाद और लोगों द्वारा रास्ते हेतु जमीन नहीं देने के कारण भी रास्ते के निर्माण में समस्या आती है।	गाँव सभा कमेटियों के गठन के बाद जहां जहां रास्ते नहीं है वहां के प्रस्ताव लिए गए हैं और उसे पंचायत की एक्शन प्लान में शामिल करवाने के बाद रास्ते का संकट का समाधान होने की संभावना है।	**तात्कालिक**	
2	**शिक्षा व्यवस्था ठीक नहीं होना**	**सार्वजनिक**	गाँव में बच्चों के शिक्षा का स्तर एकदम निम्न है क्योंकि बच्चों को पढ़ाने के लिए न	इस समस्या के समाधान के लिए गाँव सभा में निर्णय लिया गया है कि शिक्षा विभाग और जिला अधिकारियों को	**तात्कालिक**	

			तो अध्यापक है और न हीं कमरे हैं सरकार की शिक्षा के प्रति उदासीनता और उनकी शिक्षा नीति के कारण न तो अध्यापकों की नियुक्ति हो पा रही है न ही कमरों का निर्माण हो पा रहा है।	ज्ञापन दिया जाएगा और इसके लिए ब्लॉक के अन्य गांवों की भी मदद ली जाएगी।		
3	**कृषि संबधी समस्या**	**व्यक्तिगत / सार्वजनिक**	गाँव में कृषि योग्य भूमि कम है। सिंचाई की सुविधा भी नहीं है। बरसात का पानी गाँव में रोकने की कोई व्यवस्था नहीं है। उन्नतशील बीज और खाद का अभाव है।	खेतों का समतलीकरण, बरसात का पानी रोकने के लिए खेतों की मेड़ बंदी तथा कच्चे चेक डैम का निर्माण, तालाबों की मरम्मत और गहरीकरण और खेत तलावड़ी का निर्माण करना। गाँव के नाले में पानी रोकने की योजना। बागवानी पर भी विशेष ध्यान देना।	**तात्कालिक**	
4	**आवास निर्माण, पेंशन और उसके भुगतान संबधी समस्या**	**व्यक्तिगत**	गरीबी के कारण बहुत से लोग अपने लिए आवास नहीं बना सकते हैं। गाँव में जिन लोगों को आवास की बेहद जरूरत है उनके आवास नहीं बने हैं। जो सक्षम लोग हैं उनके आवास बन गए हैं। जिन लोगों के आवास बन भी गए हैं उनमें से कुछ लोगों का भुगतान नहीं हुआ है।	गाँव के सबसे जरूरतमंद लोगों को आवास निर्माण के लिए आवेदन कराना और उसके लिए प्रयास करना। बकाया राशि का भुगतान तुरंत करना। जिन लोगों को पेंशन नहीं मिल रही है उनको पेंशन योजना से जोड़ना। बंद पेन्शन का भुगतान तुरंत शुरू करवाना।	**तात्कालिक**	
5	**काबिज भूमि पर खातेदारी का हक नहीं मिलना**	**सार्वजनिक**	लोग कई पीढ़ियों से गाँव में बसे हैं लेकिन जितनी भूमि पर वह काबिज है उसकी खातेरदारी का हक उनको नहीं	काबिज भूमि पर सामूहिक दावा करना। पट्टे की जमीन जिसकी पैनल्टी राजस्व विभाग ने लेना बंद कर दिया है उसे कोर्ट में जमा	**दीर्घकालिक**	

			मिला है। सरकार की अघोषित नीतियों के कारण राजस्व विभाग ने खातेदारी हक देना बंद कर दिया है। जिसके कारण भविष्य में उनकी जमीन आसानी से छीन जाने का संकट खड़ा हो गया है।	करना क्योंकि पेनल्टी नहीं देने से पट्टा खारिज हो जाएगा और धारा 91 के अनुसार काबीज जमीन का नियमन कराना। गाँव सभा द्वारा सबकी फाइल तैयार करके एक साथ राजस्व विभाग में दावे का मुकदमा करना।		
6	**पेयजल की समस्या**	**सार्वजनिक**	गाँव के पीने के पानी में फ्लोराइड की मात्रा पाई जाती है। बरसात का पानी गाँव में रोकने की कोई व्यवस्था नहीं होने से भूजल स्तर लगातार नीचे जाने से फ्लोराइड की मात्रा पीने के पानी में ज्यादा बढ़ रही है और गर्मियों में पीने के पानी का संकट बढ़ रहा है।	शुद्ध पीने के पानी के लिए बरसात के पानी को रोककर पीने लायक करके पीना। हैंडपंप में आर. ओ. प्लांट लगाना। बरसात के पानी को रोकने की बेहतर योजना।	**तात्कालिक**	

संसाधन आंकलन व SWOT विश्लेषण

S- Strengths शक्तियां	W- Weakness कमजोरी	O- Opportunities अवसर	T- Threats चुनौतियां
आवागमन - गाँव में पक्की सड़कें कच्चे रास्ते	गाँव तक एक पक्की सड़क गयी है। वह सड़क अभी खस्ता-हाल है। पगडंडी को चौड़ा नहीं करना।	रास्ते ठीक होने से गाँव में साधन आ जा सकते हैं जिससे छोटे मोटे व्यवसाय किए जा सकते हैं। लोगों को आने जाने में समय की बचत होगी।	गाँव सभा का मजबूत नहीं होना। सरकार तथा पंचायत की उदासीनता और गाँव के लोगों में जागरूकता की कमी।
जल नाला कुआं बोरवेल हैंड पंप	एनीकट है लेकिन टूटा है। पहाड़ों के दर्रे में एनीकट नहीं बनाना। तालाबों और तलावडियों का गहरीकरण और मरम्मत न होना। कुओं को रिचार्ज नहीं करना।	पुराने एनीकट की मरम्मत और नए एनिकट बनाना। तालाब और तालावडी का गहरीकरण और मरम्मत बरसात के पानी को योजनाबद्ध तरीके से अगर रोका जाए तो गाँव में पानी के संकट को दूर किया जा सकता है	पंचायत द्वारा इस चुनौती से निपटने को कोई कार्ययोजना नहीं होना। गाँव के लोगों की उदासीनता।

	गाँव में जल की कमी ना हो इसके लिए गाँव के लोगों की जागरूकता में कमी।	जिससे सिचाई और अशुद्ध पीने के पानी के संकट को दूर किया जा सकता है और भू जल स्तर को भी ऊँचा किया जाता हैं।	
आजीविका के साधन	गाँव की पहाड़ियाँ और बहुत सारी जमीन खाली पड़ी हैं, गाँव में रोजगार के साधन का अभाव। कृषि उत्पादन की कमी। अच्छी नस्ल के पशुओं का अभाव।	गाँव में खाली पड़ी जमीन और पहाड़ों पर वृक्षारोपण, चारागाह का अच्छा प्रबंधन, अच्छी नस्ल के पशुओं का पालन, सब्जी के खेती से आय के स्रोत बढ़ाये जा सकते हैं। तालाबों की मरम्मत और गहरीकरण करके मछली पालन करना1	गाँव के लोगों के पास पर्याप्त खेती कीजमीन का अभाव। सार्वजनिक जमीन पर कुछ लोगों का अवैध कब्जा। उन्नतशील बीज का अभाव। जमीन और पहाड़ों के बेहतर प्रबंधन की कमी।
भूमि	गाँव की खाली पड़ी जमीन और पहाड़ों का जीविका के साधन के रूप में प्रयोग नहीं होना। गाँव की सार्वजनिक जमीन पर कुछ लोगों का अवैध कब्जा। सभी लोगों के पास पर्याप्त खेती की जमीन नहीं होना।	खेती की जमीन की उर्वरा शक्ति को बढ़ाना। जीविका के साधन के रूप में गौण खनिज को निकलवाना। गाँव की सार्वजनिक जमीन पर अवैध कब्जे को खाली कराना। खाली पड़ी जमीन पर वृक्षारोपण करवाना।	सभी लोगों के पास पर्याप्त जमीन का अभाव। सार्वजनिक जमीन पर अवैध कब्जा सिंचाई का अभाव खाली पड़ी जमीन के बेहतर उपयोग की योजना का अभाव।

गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव का नजरिया नक्शा –

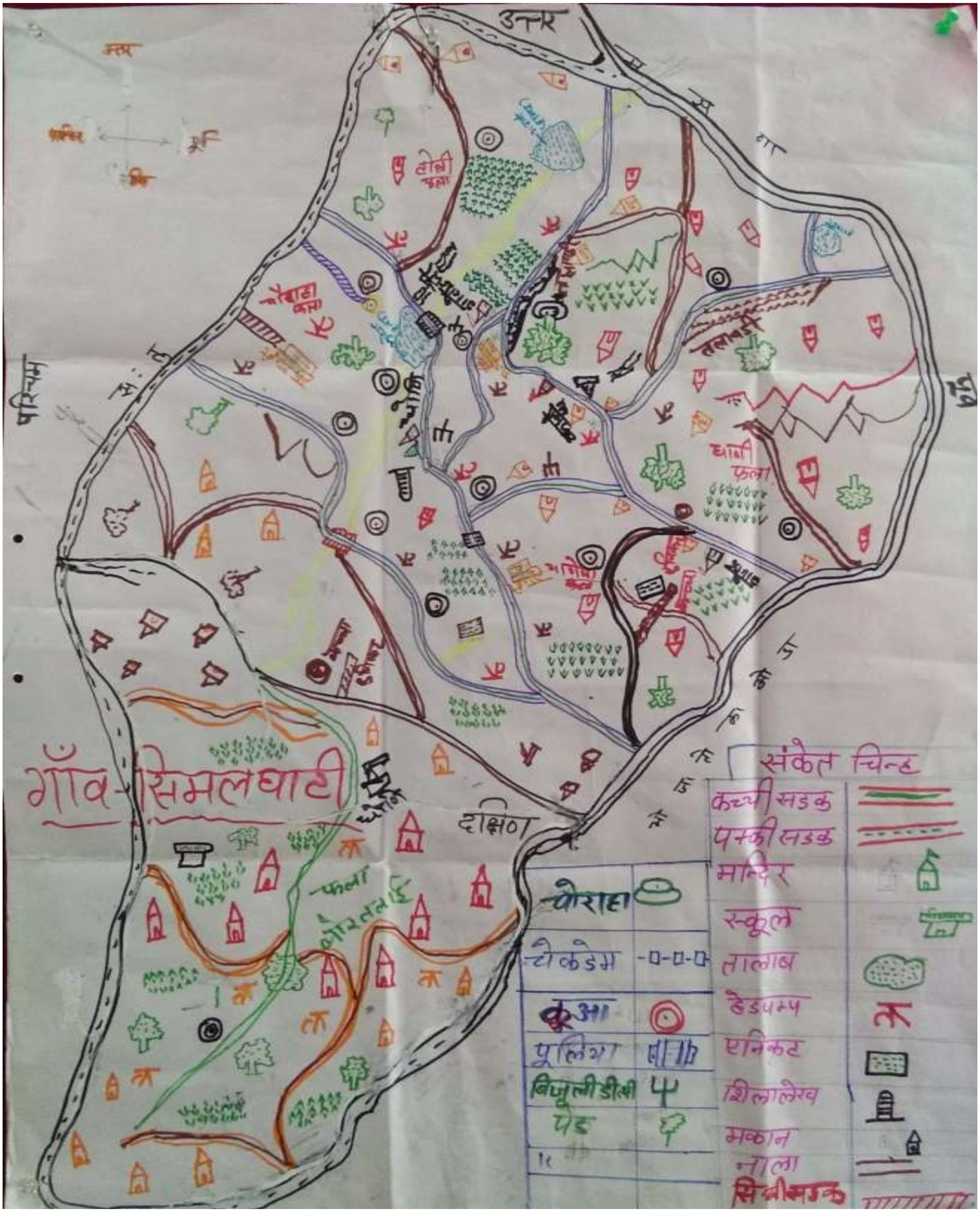

नजरिया नक्शा सिमल घाटी

गाँव सभा द्वारा तैयार गाँव विकास योजना में प्रस्तावित कार्यो का विवरण -

प्रस्ताव सं.	प्रस्तावित कार्य	संख्या	लाभार्थी परिवारों की संख्या
1	आर.सी.सी. सड़क निर्माण	3	गाँव के समस्त परिवार
2	कच्ची सड़क निर्माण	3	गाँव के समस्त परिवार
3	आर. ओ. प्लांट निर्माण	3	--
4	तालाब मरम्मत कार्य रिंग वाल निर्माण -गवली वाला तालाब	1	गाँव के समस्त परिवार
5	कुआ गहरीकरण एवं रिंग वाल	14	14
6	सार्वजनिक कुआं निर्माण फुटेरा तालाब तलैया में सार्वजनिक कुआ निर्माण कठुआ वाली दरी में सार्वजनिक कुआं निर्माण निम्बू वाला कुआ बोर तलाई सार्वजनिक कुआं निर्माण	3	गाँव के समस्त परिवार
7	पक्के चैक डैम निर्माण कार्य	4	गाँव के समस्त परिवार
8	कच्चे चेक डैम कार्य	30	30
9	स्कूल कमरों के छत मरम्मत एवं चाइना मोजेइक कार्य 1. उच्च प्राथमिक विद्यालय धानी सिमल घाटी 2. प्राथमिक विद्यालय धानी सिमल घाटी 3. प्राथमिक विद्यालय भागेला स्कूल परकोटा निर्माण 4. प्राथमिक विद्यालय धानी स्कूल का परकोटा एवं खेल मैदान समतलीकरण 5. प्राथमिक विद्यालय धाणी स्कूल बारी एवं दरवाजा लगवाना मुख्य दरवाजा	1	गाँव के समस्त परिवार
10	कुंआ गहरीकरण एवं रिंग वाल	12	12
11	नए का कुआं निर्माण 5	5	5
12	सामुदायिक भवन निर्माण गातोड़ जी मंदिर गुरु गोविंद जी की धूणी पर	2	गाँव के समस्त परिवार
13	पुराने हैंडपंप मरम्मत कार्य	4	--
14	नए हैंडपंप	9	--
15	केटेगरी चार के प्रस्ताव समतलीकरण / मेड़बंदी	42	42

गाँव विकास नियोजन प्रक्रिया – फोटो गैलेरी ----

प्रस्ताव कवरिंग लेटर

प्रस्ताव प्रथम पेज

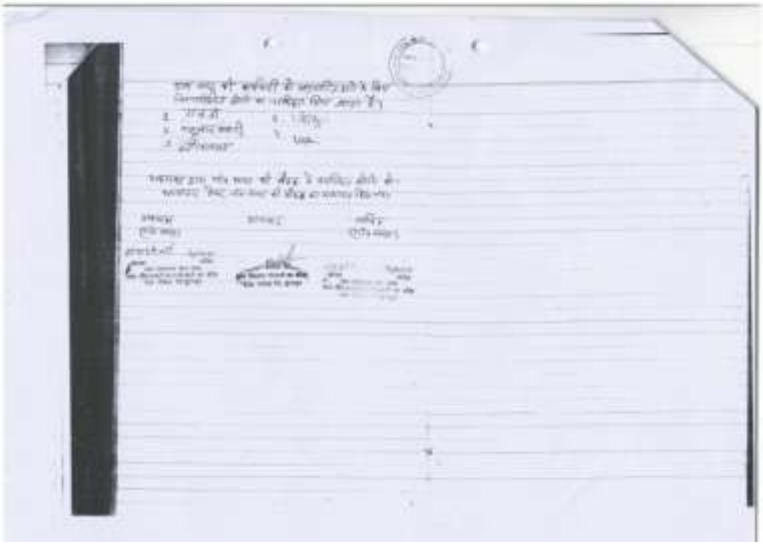

प्रस्ताव अंतिम पेज

विलेज प्लानिंग फेसिलिटेटर टीम (वीपीएफटी) –

	नाम	**फोन न.**
1.	शिवराम अहारी	9166 452342
2.	गट्टू लाल अहारी	95710 25735
3.	देवीलाल पारगी	90017 02229
4.	रूपसी आहारी	75687 18651
5.	रामजी भगत	99298 63983